

१६६ महाबाल विधि
पीठार्चन विधि.

ASHA ARCHIVES

3479

पुद्गा पुनर्वसि च स्वधना ईतद ईकं।
दशमं मन्त्रं तद ईमा विरुण्ण शिव विरुणि ॥

ॐ नमः श्रीमहादेवे नवाय ॥ ॥ अथ महावसि विधि लिख्यता ॥ आदो यजमान न
सूर्यार्घ्य यथा लज्जनं ॥ वाक् ॥ यजमानस्य अथ त्वं वदा कृपया जन्म समरुलया
यि कामनार्थं यथा यत् ॥ किमहावस्य च न निमित्तार्थं ॥ तथेव आवाच्य न सूर्यार्
घ्यं पुन नमस्कारं ॥ वती गी क न वक्ता ऊन्या सः ॥ जलाघ्याग यज्ञा ॥ रत गुह्यान्म
यज्ञा ॥ माहिनी सा धनं मालिनी आवाहनं ॥ यश्च वसिष्ठी सर्वज्ञा विव लियूजा ॥
ततस्तुतिस्तार्जनं ॥ नवात्मा कम मूल स्नाना नं आसनं यश्च तिनेय द्यधूय दीप

[illegible]

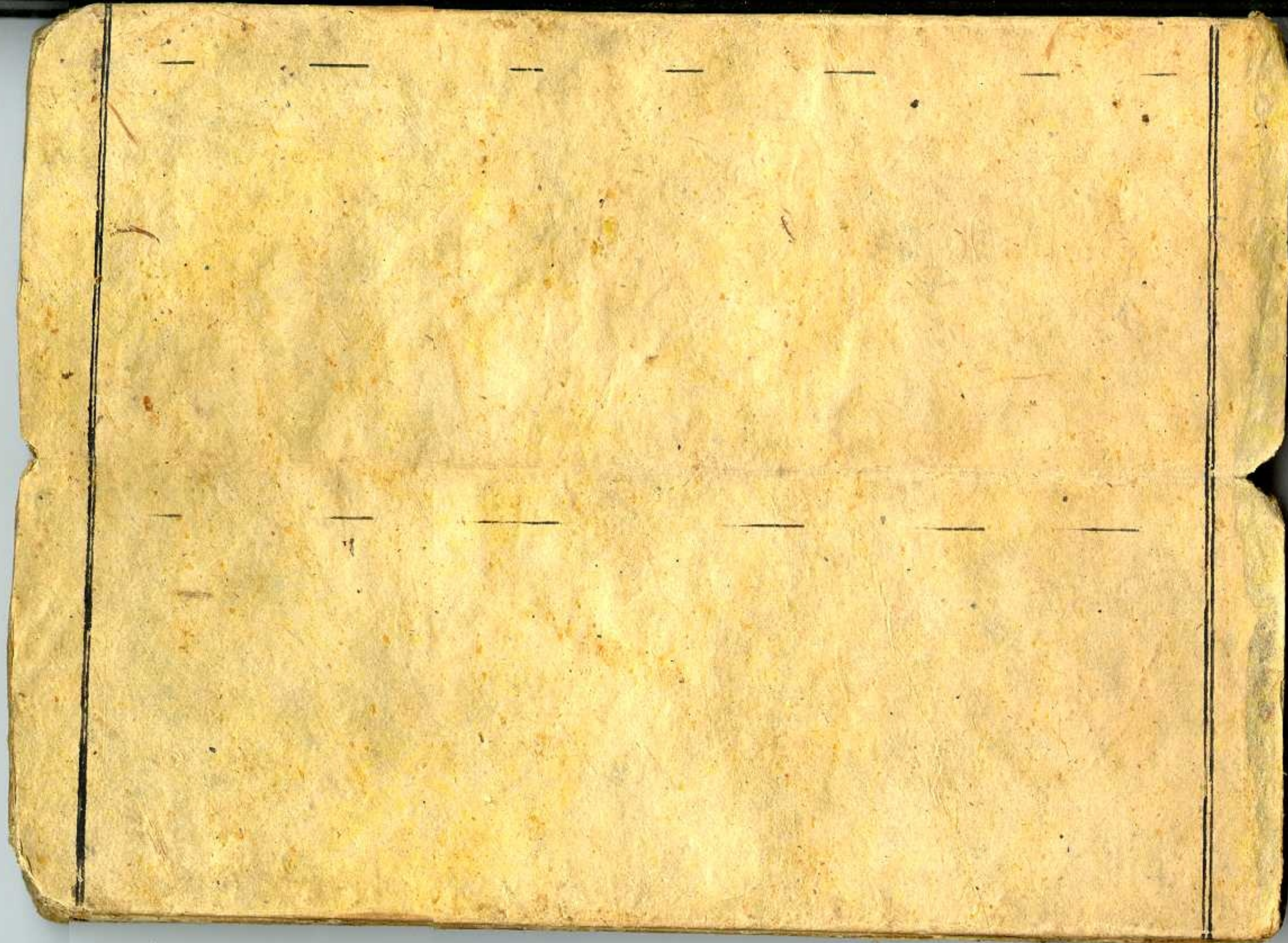
यवप्रायणीगकिसहिताययायू॥१॥वलिं॥नृं५कवर्मदुहुकमहाहेत्रवाय
महाभ्रभानाधियतयसांगसमगधस्यनिवात्राययायू॥३॥वलिं॥नृं५सो
म्यहेत्रवाययायू॥३॥वलिं॥नृं५भक्तुरताययायू॥३॥वलिं॥॥वलि
दाउदंदवलियात८यूजा॥नृं५जयाययायू॥३॥वलिं॥७र्वविऊयाअजित
श्रयनाजिता नन्दा रुडा ऊया लीमा॥मूलवलि॥नृं५पूर्वादि॥म्यासिख४६००द्याभि
तामहुरुकसोम्यभक्तुरताऊयाद्यष्टसहितायसांगसमगधस्यनिवात्राय६००दं
मयायष्यधूपदीपयूजामयायथापनीतान्नअलिवलियिमितउदनयूजाअमक
कामतयावलिगृह्ण१७नृ२मनृ२ल२ख२खाहि२भक्तिकृ२रुद्रस्वाहा॥थानिमडा

[illegible][illegible]

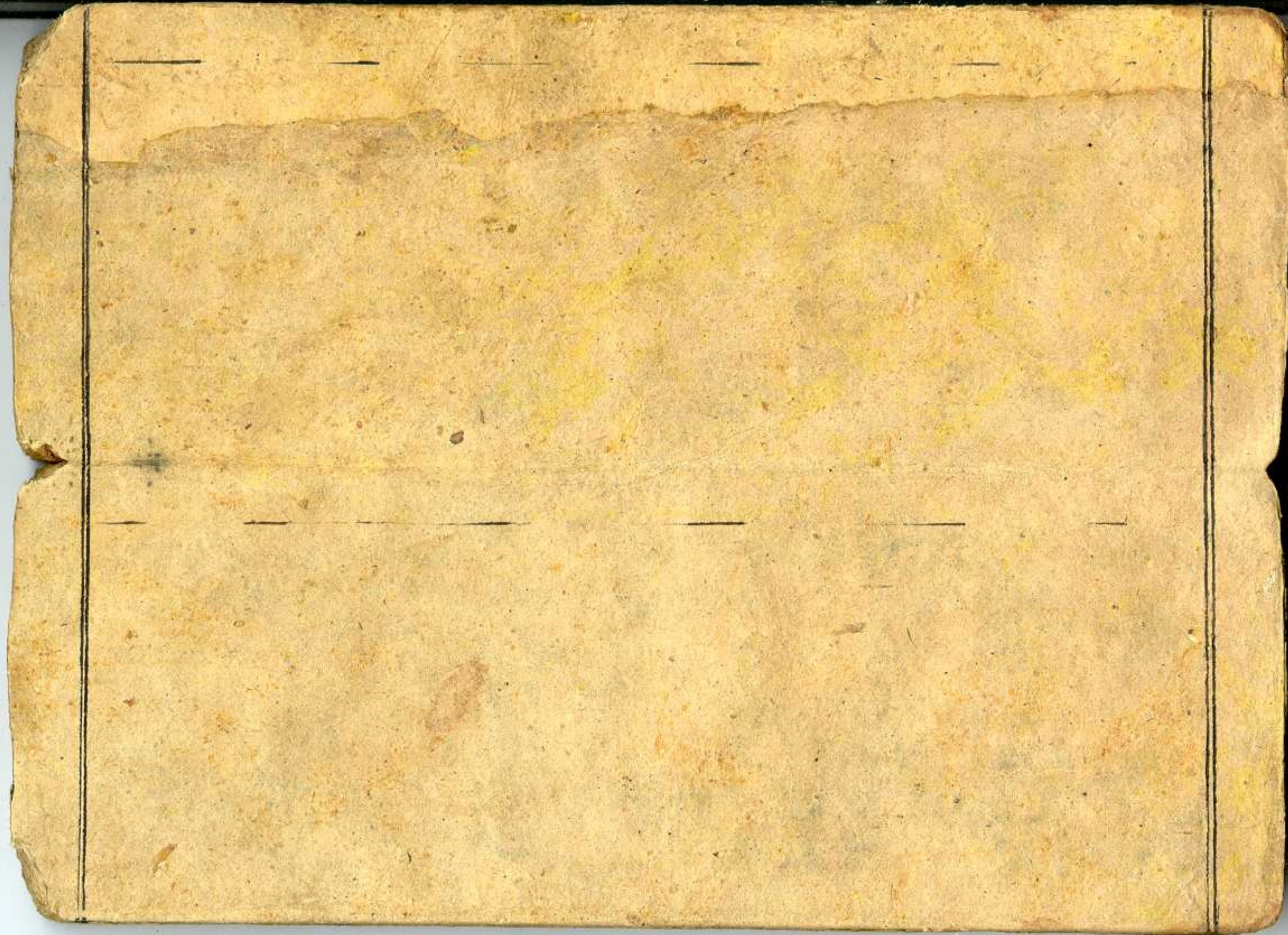
आ। मथ वसि॥ ॥ अथ दक्षिण वसि॥ जें मां हृदयादि न्यास॥ ऊ। लाघया उरुत शुद्धात्त
 पूजा॥ आवाहनं॥ जें सुमाय दक्षिण दिग्वासि स्य ४६६ ह म धुल जा ग २ स्वाहा॥ आसनं॥
 आधनादि॥ जें महिषासनाय पापू॥ ध्यानं॥ जें महिषासनाय पापू॥ दधुहसुसधन
 ६॥ नीलांजन समंद वं आहया मिय नं धनं॥ ध्यान पया पापू॥ आवाहनादि अंश लिं॥
 जें मां मीमं म सुमाय दधुहसुसधन धियत सुमहिषासनाय पापू॥ वसि॥ जें
 मां हृदयादि न पूजा॥ वसि॥ जें चवर्ग ४ चतुर्नव वायकी मात्री ४ किं सहिता य
 पापू॥ वसि॥ जें चवर्ग ४ अग्निवताल ४ न वायम हा भभना धिय सांग म म
 ६ स्य निवा न य पापू॥ वसि॥ जें चवर्ग ४ न वाय पापू॥ वसि॥ जें काधरुनाय पापू
 वसि॥ वसि ४ अंश वसि पात ४ पूजा॥ जें गंतीनाय पापू॥ वसि॥ जें धायनी सुलाय
 म हा ३

वनांगी उलानिका लीषनी महान न्या का लामुखी॥ मूल वसि॥ जें दक्षिण दिग्वासि स्य ४
 यमवधु अग्निवताल वृद्ध काधरुतर्गरी नाद्य सुमहिताय सांग म य स ग हा स्य निवा ना
 य ४६६ मया य य धूय दीय पूजा मया य (धायनी ती न अलिव लि पि नि तं) अदन पूजा अ
 मूक काम न यो वलिं ४ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 निमडा॥ वि। ण व उ य याल काय॥ य निळा जाय ला ४॥ न भा सु न य म म य दधुहसुसध
 नाय च। दक्षिण दिग्वासि लाय धर्म नाऊन भा मुत॥ चतुर्नव कोमात्री या ला ४ क्रमा
 मुति अंग न्यादि॥ अथ बा वसि सता थ॥ ४६६ दि दक्षिण वसि॥ ॥ अथ नं मृत् वसि॥
 जें मां हृदयादि न्यास॥ ऊ। लाघया उरुत शुद्धात्त पूजा॥ आवाहनं॥ जें ने मृत्वाथ नं मृत्
 दिग्वासि स्य ४६६ ह म धुल जा ग २ स्वाहा॥ आसनं॥ आधनादि॥ जें थतासनाय पापू॥

ध्यानं नाम हाथ त समानं च कुम्भं महावर्णं खड्गं रुद्रं धृतं देवं आवाहना क्रमं ध्यायेत् ॥ ध्यानं
यथा यथा ॥ आवाहनादि यथा ॥ वलि ॥ वं ॥ कां कीं कं कं ॥ ध्यायेत् ॥ मृत्पाय स्वर्गं रुद्रं सायना क्रमाधिप
तयथा सनायथा यथा ॥ वलि ॥ वं ॥ माह दयादिनं धृष्टं ॥ वलि ॥ वं ॥ टवर्गकाधरेन वा
यवे कवीन किं स हिताय यथा ॥ वलि ॥ वं ॥ तवर्गजं ॥ निजिह्वमहा रेन वायमहा ॥ ध्यायेत् ॥
नाधियतयसां गयसगद्यस्य निवानायथा यथा ॥ वलि ॥ वं ॥ पुनरेन वाययथा यथा ॥ वलि
वं ॥ इह ॥ लकटं रुद्राथया यथा ॥ वलि ॥ वलि ॥ ध्यायेत् ॥ वलि ॥ ध्यायेत् ॥ वलि ॥ ध्यायेत् ॥ वलि ॥ ध्यायेत् ॥
उवं रुद्रिनी यदुनी धूर्जति विषरुद्र सर्वसिद्धि ॥ उधु ॥ रुद्र ॥ मूलवलि ॥ वं ॥ नैज
सदिग्धसिद्धिनेनैव ॥ ध्यायेत् ॥ निजिह्वमहा रेन वायमहा ॥ ध्यायेत् ॥
रस्य निवानाय रुद्रमयाय









[illegible][illegible]

ASHA ARCHIVES

3479

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ २ ॥ अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदपुत्रः धर्मपुंगव ॥ ३ ॥

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ २ ॥
 ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ३ ॥
 ॥ श्रीरामाय नमः ॥ ४ ॥
 ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ ५ ॥
 ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 ॥ श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 ॥ श्रीविष्णुय नमः ॥ ८ ॥
 ॥ श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ९ ॥
 ॥ श्रीनारायणाय नमः ॥ १० ॥
 ॥ श्रीवसुदेवाय नमः ॥ ११ ॥
 ॥ श्रीअर्जुनाय नमः ॥ १२ ॥
 ॥ श्रीकुरुक्षेत्राय नमः ॥ १३ ॥
 ॥ श्रीमहाभारताय नमः ॥ १४ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ १५ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ १६ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ १७ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ १८ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ १९ ॥
 ॥ श्रीमहाभारतसंहिताय नमः ॥ २० ॥

[illegible][illegible]

कुंजीयनमन्त्रनीकादधुनकविधविनी ॥ ३ ॥ मयनकादिधा ॥ १ ॥ वल्लभयनवतनाथयवल्लभवीद
 यंवायायु ॥ ॥ लोननीवतिरुद्वययमविनाजित ॥ सुधाकीरुमयसालाधुताद्वीरुजनिनी ॥ ४ ॥
 लोमोसुधुदीयमस्तनन्दनाथनयनालायमनामनीदयवायायु ॥ धूमवर्धुद्विउजवकाहिकायाल
 धा ॥ ५ ॥ विनी ॥ यथाकयालविधुताद्वीनिमनजायद ॥ ६ ॥ नतालाय ॥ ७ ॥ श्रीकेलागयननन्द
 नाथयंवादीदीदयवायायु ॥ ८ ॥ दर्वीनाकीनवधुर्नपिष्टलरुयधविनी ॥ दर्वीयद्वारुयधनरुजस
 काययागिवा ॥ ९ ॥ लोमोमनयनदीयनायालभयनालाकनलीदयवायायु ॥ १० ॥ यमद्विउजम
 र्वयसकाकाविनाजित ॥ ११ ॥ वनारुयधनद्वीनोनिहयसुजायद ॥ १२ ॥ लोमो ॥ १३ ॥ श्रीमिहा
 नन्दनाथयधुर्नकाटधुर्नवायायु ॥ १४ ॥ नकारुद्विउजदर्वीगुलयायविनाजित ॥ १५ ॥ नका

यालवधुताययययय ॥ १६ ॥ लोमोमनयनदीयनायालभयनालाकनलीदयवायायु ॥ १७ ॥
 नीनाऊनारुद्विउजमवयधुर्नविनी ॥ १८ ॥ दर्वीकुरुकयालविधुताद्वीनमायद ॥ १९ ॥ लो ॥
 ॥ २० ॥ श्रीविमलानन्दनाथयविधुर्नवायायु ॥ २१ ॥ गुरुमग्नितिरुद्वीजुनकनदय
 ॥ २२ ॥ दीदीदयधुर्नवायायु ॥ २३ ॥ लोमोमनयनदीयनायालभयनालाकनलीदयवायायु ॥ २४ ॥
 कायवायायु ॥ २५ ॥ पीतारुद्विउजमवयधुर्नविनी ॥ २६ ॥ दर्वीकुरुकयालविधुताद्वीनमायद ॥ २७ ॥
 धाविनी ॥ २८ ॥ निवययय ॥ २९ ॥ श्रीदयानन्दनाथउत्तमीदयवायायु ॥ ३० ॥ धूमवर्धुनिर्वगुरु
 गुलयायकनदय ॥ ३१ ॥ निवययय ॥ ३२ ॥ श्रीदयानन्दनाथउत्तमीदयवायायु ॥ ३३ ॥ लोमोमनयनदीयनायालभयनालाकनलीदयवायायु ॥ ३४ ॥
 नकाटधुर्नवायायु ॥ ३५ ॥ नकारुद्विउजमवयधुर्नविनी ॥ ३६ ॥ धूमवर्धुनिर्वगुरु

[illegible]

यनाम्नायाय ॥ ३ ॥ गुरुया ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु महावीरानन्दनाथवेष्ठीयवाम्नायाय ॥ ४ ॥ त
 त ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु रुहातन्दनाथवेष्ठीयवाम्नायाय ॥ ५ ॥ नवलिंग ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु
 किलिकितानन्दनाथवेष्ठीयवाम्नायाय ॥ ६ ॥ लङ्का ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु कालमायान
 न्दनाथवेष्ठीयवाम्नायाय ॥ ७ ॥ साल ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु श्रीमानन्दनाथमहालक्ष्मीय
 वाम्नायाय ॥ ८ ॥ ध्यान ॥ सर्वगिर्विशुभ्वर्षु जितशुभ्वर्षु ॥ गुल्यार्णवार्णवार्णव ॥ वनारस्यमभ
 ॥ ९ ॥ श्रीदधीसुवर्षुषादिजुगदिद्युवर्षुषादि ॥ हस्त्यायानयाय ॥ विवकीयविबिकय ॥
 ॥ १० ॥ पुनर्गुणीययी ॥ वक्राकुरु ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु अरुहाय महाकुरु अरुहाय महाकुरु
 वीयवाम्नायाय ॥ ११ ॥ निमता ॥ वै ॥ अरुहाय महाकुरु अरुहाय महाकुरु अरुहाय महाकुरु

वायापूर ॥ २ ॥ सूरधि ॥ जे काला पूर्वी नवाय डंडु वपुले नवाय तें कोस प्री दवी यना वायापूर
 ॥ ३ ॥ वलखा ॥ जे जमदहस नवाय जे सुकाधने नवाय टें वे पूर्वी दवी यना वायापूर ॥ ४ ॥ कासवी
 ॥ जे जयकी करु ६ ६ डमरुने नवाय न वावाही दवी यना वायापूर ॥ ५ ॥ तांदल ॥ जे जवमिग
 करु जे कयालने नवाय पंडु नदी दवी यना वायापूर ॥ ६ ॥ विलग ॥ जे जवकास करु
 जे जेरी यलने नवाय यं वास धु दवी यना वायापूर ॥ ७ ॥ काकि ॥ जे जे दवी काट करु जे जे ४ म
 जे जे नवाय जे मराल नी दवी यना वायापूर ॥ ८ ॥ सर्व सुधु व धुं सखाय धां वाल कावा
 सुवाहना ॥ १ ॥ ततातयाल सधु व रु ४ यी ० ॥ साल ६ ॥ जे जे जाल धनयी भय जाल ध
 वात न्यताथ जाल धु प्री यना वायापूर ॥ १ ॥ वृं गुलि ॥ जे जे य धु नि वियी भय धु प्री त न्यता

धृष्टीयत्रायाय ॥ २ ॥ गोपा ॥ नैऋतकामवृषीभयकामानन्दनाथकायधरी
 दक्षीयत्रायाय ॥ ३ ॥ अग्निवसुत्रा ॥ नैऋतडायानवीभयडायीश्वरानन्दनाथडायी
 धृष्टीयत्रायाय ॥ ४ ॥ तथामिधुवाका ॥ इन्द्रैर्लक्ष्मीयशुयतिरुद्धपालायनमः ॥
 इन्द्रैर्मन्त्रैर्लक्ष्मीयशुयत्रायाय ॥ ध्यानं ॥ वैश्वंतीला अततिर्यदहं विनयः कदिगम
 री ॥ मधुमालाधरं योर्दग्धवर्मविशुद्धिर् ॥ दया ध्यानं ॥ वैश्वकामवृषामहानगायमान
 दिव्यवर्चसा ॥ वाकावसतिरादक्षीयत्रागतमयरा ॥ इत्यादि ॥ ॥ तन्मन्त्रमहलिमन्त्र
 ॥ यथागादि ॥ मृगिगादि ॥ वृक्षादि ॥ वृक्षादि ॥ वृक्षादि ॥ वृक्षादि ॥ वृक्षादि ॥

तामतगन्मधु ॥ दुमरुतेनवग्रीगुह्यवरीययी ॥ ॥ ४८ ॥ श्रीचन्द्रयितामहाविनायिका
 यी ० यज्ञिकासमाका ॥ ॥ सुधयवावधिधिलिखित ॥ काटीनर ॥ कलुषय ॥ सुमलास
 मय ॥ धलिचय ॥ यलिमय ॥ जीवजानेवय ॥ वीहिर्मग ॥ दिव्यदनिता ॥ वसुलकावयीत
 वरुपताकादि ॥ वक्रणीययी ॥ मरु ॥ ॥ ५० ॥ सुमयगनरुदुर्गवरुनवायुवयीदवीधुज
 रुसुयवनरुगयालाययाय ॥ १ ॥ निमता ॥ ॥ वयस्वान ॥ रुतलतासमय ॥ दृताय ॥ या
 यशुसध ॥ युवाकजानेवय ॥ वीहिपूया ॥ नरु ॥ तदनिता ॥ वसुलकावयताका
 दि ॥ मारुवरीययी ॥ मरु ॥ ॥ ५१ ॥ सुयुक्कनदीपवरुनाययी ॥ निधवरुगयालाययाय ॥

॥ २ ॥ सुलूथि ॥ याटलीखान ॥ यलतासमय ॥ मरुलयानयाय ॥ ॥ ५२ ॥ मधु ॥ वतरिलिवा
 कजानेवय ॥ वीहिर्मग ॥ यवावयनिता ॥ वसुलकावयताकादिवरुवर्ग ॥ कोमावरीययी ॥
 मरु ॥ ॥ ५३ ॥ काकालागिनीरुगुमिरुगयालाययाय ॥ ३ ॥ वलखा ॥ मलिस्वान ॥ वन
 वलतास ॥ सुमययानयाय ॥ लडुवासध ॥ निवविजानेवय ॥ कलमुगुवीहि ॥ मातिदनि
 ता ॥ वसुलकावयताकादिवरुवर्ग ॥ मरु ॥ ॥ ५४ ॥ सुमयगनरुधनदरुगयालाय
 याय ॥ वीहिर्मग ॥ ४ ॥ तलश ॥ ॥ ५५ ॥ कलसमय ॥ सुधयय ॥ वतास
 ॥ ॥ सुधयसजानेवय ॥ वीहिमास ॥ रुतदनिता ॥ वसुलकावयताकावकवर्ग ॥

वावाहीयवी ॥ त्रै ॥ जयकीरुगविग ॥ कुरुयालाययाय ॥ ५ ॥ कोसधि ॥ नृयस्वान ॥
 बालसलासमय ॥ ६ ॥ उतिया ॥ बालयस ॥ ७ ॥ यमजानेवय ॥ वीहिकातात ॥ नानि
 कदमि ॥ ८ ॥ वमालका नयगाका कुरुवर्ध ॥ ९ ॥ वीहिकातात ॥ त्रै ॥ वावविग ॥ कुरुवर्ध
 थकुरुयालाययाय ॥ १० ॥ नवर्तने ॥ जीविस्वान ॥ विध्वयानया ॥ ११ ॥ लाहासमय
 ॥ स्वमय ॥ धविधमजानेवय ॥ वीहिस्वान ॥ कवदुननदकिता ॥ वमालका नयगाका
 कुरुवर्ध ॥ वासुयवी ॥ त्रै ॥ नमो वकाप्रकन विहगान कुरुयालाययाय ॥ १२ ॥ व
 लंग ॥ वनमालीस्वान ॥ ईला ॥ १३ ॥ दयसमय ॥ इय ॥ यलिमय ॥ विविगजा

य ॥ वीहि वका ॥ बालयनि ॥ १४ ॥ वमालका नयगाका कुरुवर्ध ॥ महालक्ष्मीयवी ॥
 यवीकाठकुरुवर्ध कुरुयालाययाय ॥ १५ ॥ वाको ॥ दिगमालस्वान ॥ लाहासमय ॥
 कुसयानया ॥ १६ ॥ वीहिकातात ॥ नानि कदमि ॥ १७ ॥ वीहिकातात ॥ त्रै ॥ वावविग ॥ कुरुवर्ध
 वमालका नयगाका कुरुवर्ध ॥ यवायुनवी कुरुवर्ध ॥ त्रै ॥ वावविग ॥ कुरुवर्ध
 वीमका काल कुरुयालाययाय ॥ १८ ॥ काविनाय ॥ त्रै ॥ वावविग ॥ कुरुवर्ध
 ॥ १९ ॥ वदकवलि ॥ त्रै ॥ वावविग ॥ कुरुवर्ध ॥ नयालमय ॥
 वनविधि ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ नवर्तने ॥ जीविस्वान ॥ विध्वयानया ॥ २३ ॥ लाहासमय
 वमालका नयगाका कुरुवर्ध ॥ वासुयवी ॥ त्रै ॥ नमो वकाप्रकन विहगान कुरुयालाययाय ॥ २४ ॥ व
 लंग ॥ वनमालीस्वान ॥ ईला ॥ २५ ॥ दयसमय ॥ इय ॥ यलिमय ॥ विविगजा

